अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

प्रथम अध्याय : राजभाषा हिंदी : वैधानिक प्रावधान का विवेचन १ से २२

प्रास्ताविक

१.१ भारतीय परिवेश में हिंदी के विविध रूप

१.१.१ मातृभाषा हिंदी

१.१.२ बोलचाल की हिंदी

१.१.३ संपर्क भाषा हिंदी

१.१.४ प्रयोजनमूलक हिंदी

१.१.५ राष्ट्रभाषा हिंदी

१.२ राजभाषा की संकल्पना

१.३ राजभाषा पद के लिए हिंदी का संघर्ष

१.४ हिंदी का राजभाषा के रूप में स्वीकार : कारण और ऐतिहासिक पार्श्वभूमि

१.५ भारतीय संविधान में हिंदी के लिए प्रावधान : अनुच्छेद ३४३ से ३५१

१.६ राजभाषा विषयक अधिनियमों में संशोधन

निष्कर्ष

पृष्ठ

द्वितीय अध्याय : कोल्हापुर दूरसंचार में राजभाषा हिंदी का प्रयोग : स्वरूपगत विवेचन २३ से ३५

प्रास्ताविक

२.१ कोल्हापुर दूरसंचार का ऐतिहासिक परिपार्श्व

२.२ हिंदी अनुभाग का प्रारंभ

२.३ हिंदी-पदों की संख्या और नियुक्तियाँ

२.४ राजभाषा हिंदी के प्रयोग का स्वरूप

२.४.१ हिंदी पखवाड़े का आयोजन

२.४.२ हिंदी पुस्तकालय

२.४.३ हिंदी गृहपत्रिका

२.४.४ हिंदी स्वर्ण जयंती वर्ष के कार्यक्रम

२.४.५ हिंदी प्राज्ञ एवं टंकण प्रशिक्षण

२.४.६ प्रोत्साहन परक योजनाएँ

२.४.७ नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

२.४.८ राजभाषा कार्यान्वयन समिति

२.४.९ द्विभाषी मोहरें एवं प्रारूप(फॉर्म)

२.४.१० हिंदी पत्राचार

निष्कर्ष

पृष्ठ

तृतीय अध्याय : हिंदी-कार्यान्वयन में आनेवाली विभिन्न समस्याएँ ३६ से ७५

प्रास्ताविक

३.१ अधिकारी एवं कर्मचारियों की हिंदी विरोधी मानसिकता

३.१.१ राष्ट्रभाषाभिमान का अभाव

३.१.२ शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी होना

३.१.३ अपराध बोध का अभाव

३.१.४ इच्छा-शक्ति का अभाव

३.१.५ परमुखापेक्षिता

३.१.६ अंग्रेजी की तुलना में हिंदी की दुरुहता

३.१.७ काम की गति में बाधा

३.१.८ राजभाषा नियमों का अज्ञान

३.१.९ अंग्रेजी में ही काम करने का आग्रह

३.१.१० अंग्रेजी शब्दों का अति परिचय

३.२ वैधानिक प्रावधान में स्थित विसंगतियाँ

३.३ तकनीकी समस्याएँ

३.३.१ मानक तकनीकी शब्दावली का अभाव

३.३.२ संगणकीकरण

३.४ सरकारी नीतियों में स्थित खोखलापन

३.५ हिंदी अनुभाग में नियुक्तियों के कारण आनेवाली समस्याएँ

३.५.१ नियुक्त कर्मचारियों में प्रशिक्षण का अभाव

३.५.२ नियुक्त हिंदी अधिकारी एवं अनुवादक में लगन का अभाव

३.५.३ हिंदी अधिकारी एवं अनुवादक का अभाव

३.६ अन्य भाषाओं के शब्द स्वीकारने की झिझक

३.७ हिंदी-पदों पर नियुक्ति के पत्र भी अंग्रेजी में-घोर विसंगति

३.८ हिंदी-कामकाज में निरंतरता का अभाव

३.९ हिंदी के लिए करोड़ों रुपयों का व्यय और उसके परिणाम पर प्रश्नचिह्न

३.१० हिंदी अनुभाग-उपेक्षित अनुभाग

३.११ हिंदी-कार्यान्वयन का निरीक्षण-एक दिखावा

३.१२ स्थानीय भाषा का प्रभाव तथा प्रचलन

३.१३ दूरसंचार का निगमीकरण तथा निजीकरण

निष्कर्ष

पृष्ठ

चतुर्थ अध्याय : हिंदी-प्रयोग की समस्याओं के समाधान ७६ से ९४

प्रास्ताविक

४.१ राष्ट्रभाषाभिमान जागृति

४.२ वैधानिक प्रावधानों में संशोधन

४.३ राजभाषा हिंदी के प्रयोग संबंधी नियमों को ठोस बनाना

४.४ शिक्षा के ढाँचे में परिवर्तन

४.५ तकनीकी समस्याओं का समाधान

४.६ हिंदी की आदत डालने के प्रयास

४.७ स्वयंप्रेरणा से कार्यारंभ

४.८ अंग्रेजी शब्दों का परित्याग

४.९ हिंदी-पत्राचार बढ़ाने के प्रयास

४.१० प्रशिक्षण प्राप्त कर्मचारियों के लिए हिंदी-कामकाज अनिवार्य किया जाए

४.११ हिंदीकरण के फायदों से अवगत किया जाए

४.१२ सतर्कता न बरतने पर होनेवाली स्थिति

४.१३ निरीक्षण जोश, उत्साह तथा सत्यान्वेषण के साथ हो

४.१४ हिंदी अनुभाग के कर्मचारियों का प्रशिक्षण

४.१५ नीतियों का अनुपालन न करने पर दंडविधान

निष्कर्ष

पृष्ठ

पंचम अध्याय : कोल्हापुर दूरसंचार में हिंदी प्रयोग की संभावनाएँ ९७ से १०९

प्रास्ताविक

५.१ पत्राचार, जो हिंदी में किया जा सकता है

५.२ अनुभाग, जिनमें हिंदी में कामकाज किया जा सकता है

५.३ हिंदी साँफ्टवेअर के सहयोग से हिंदी प्रयोग के संभावित अनुभाग

५.४ बैठकें, जिनका वार्तालाप एवं वृत्तांत-लेखन हिंदी में किया जा सकता है

निष्कर्ष

उपसंहार

परिशिष्ट

संदर्भ ग्रंथ-सूची

***